VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

घरानों के बदलते आयाम

डॉ. श्वेता दीपक वेगड़
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
श्रीमती रेवाबेन मनाहरभाई पटेल महिला कला महाविद्यालय,
भंडारा.

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रगति एवं उत्थान में घरानों का अद्वितीय तथा अनन्य साधारण महत्व रहा है। घरानों ने भारतीय संगीत को उसके कठीन समय में संजोया, संवारा, एक नया आयाम दिया जिस कारण संगीत जगत में घरानों का नाम तथा अस्तित्व अजरामर हो गया। विभिन्न घरानों ने ख्याल शैली को विकसीत करने में, समृद्ध करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है। आज समय की मांग को देखते हुए या परिवर्तन की लहर ने घरानों पर काफी सकारात्मक प्रभाव डाला है। अनेक प्रयोगों, विशाल हृदय के साथ परिवर्तन को अपनाना आदि बातों के समावेश के साथ घरानों के अस्तित्व को बचाते हुए घरानों के स्वरूप में स्वीकारात्मक बदलावों ने घरानों को नवीन तथा स्वभाविक रूप प्रदान किया है।

घरानों का स्वरूप

घराना अर्थात परिवार या परंपरा, परंपरा अर्थात संस्कृति जो कि परिवार के सदस्यों द्वारा आगे निर्वाहित की जाती है। संगीत के विश्व में घराना यह तत्कालीन परिस्थिती में एक वरदान साबित हुआ है। घरानों ने संगीत के अस्तित्व के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण किरदार निभाया है। विभिन्न विशेषताओं को केंद्र बिंदु रखते हुए प्रत्येक घरानों ने अपनी निंव को सुदृढ बनाया है। तत्कालीन घराना परंपरा में विधिवत शिक्षा, विशुद्ध गायकी, गुरू द्वारा शिष्य को गायकी के रूप में संस्कारीत करना, परंपरा, अनुशासन तथा ढांचे में बंधी कठोरता यह मुख्य पहलु होते थे। इसके अलावा कई सक्त नियम भी रहा करते थे जो कि शिष्यों को अन्य घरानों के कलाकारों को सुनने की भी अनुमति नही देता था तो अन्य गायकीयों का चिंतन मनन तो असंभव ही रहा। घरानों के यही पहलु, नियम तथा सिद्धांतों ने ही घरानों को तठस्थ बनाता है, अडीग बनाता है, परिपक्व बनाता है।

संगीत को जिवित रखने के लिए नई गायकी अथवा नवीन प्रयोग आवश्यक भी है। परिवर्तन हर विषय वस्तु में सदा होते रहेगा और तभी तक वह विषय वस्तु जीवीत होने का प्रमाण भी देती रहेगी। यदि परिवर्तन नहीं हुआ तो वह आगे नही बढ सकती वह मृतवत हो जाएगी। जो समय की कसौटि पर खरा उतरे वही शास्त्रीय संगीत है। इस कला में परंपरा है, अनुशासन है, पर साथ ही इतनी गुंजाईश भी है कि वो अपने में नई चिजों को समाहित कर आगे बढ जाऐगी। पर इसका यह मतलब भी नही की शास्त्रीयत्व को छोडकर राग के नियम की ओर ध्यान दिए बगैर मनमाने ढंग से किए गए प्रयोग पर आधारित संगीत टिकेगा भी और आगे भी जाएगा।

घरानों में परिवर्तन की लहर

कई परिवर्तनों का सामना करने के बाद अब भी घरानों का अस्तित्व बनाए रखा है। घरानेदार शिक्षा से पल्लवित हो अनेक शिष्यों तथा प्रशिष्यों ने घरानों को समृद्ध किया है। यद्यपि समयानुसार निरंतर परिवर्तन यह प्रगति का द्योतक है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि परिवर्तन से उसकी गरिमा में कुछ अंतर आ जाएगा। परिवर्तन यह उसके समृद्धता को विकसीत करने का सशक्त माध्यम है अन्यथा नवीनता की कमी महसुस हो उसकी गरिमा कम होते जाएगी। अतः समयानुसार अनेक कल्पनाशील कलाकारों तथा शिष्यों द्वारा घराना पद्धतियों की मूल विशेषताओं, तत्वों में परिवर्तन ना करते हुए, ना छेडते हुए, अपनी गायकी में सौंदर्यवृद्धि कर अनेक परिवर्तन लाए, सरलता का समावेश कर घरानों के प्रति विशेष योगदान दिया। घरानेदार शिक्षा में यह परिवर्तन लाना यह मतभेद से सामना करना पडा। शुरूआत में घरंदाज शिष्यों तथा कलाकारों ने दो विभिन्न घरानों की गायकी का संमिश्रण कर अपनी गायकी को एक नवीन रूप प्रदान कर आकर्षक बनाने कर प्रयास किया। यह जिज्ञासा पूर्ण प्रयास भी उतना सरल नही रहा, जिन दो घरानों की गायकी का सम्मीश्रण करना था उसकी पूर्ण तालीम तथा पुरा ज्ञान शिष्य को होना भी आवश्यक था। क्योंकि बिना संपूर्ण ज्ञान के हम किसी भी विषय में बदलाव नही ला सकते।

कोई भी कला हो या संगीत हो उसकी प्रगति के लिए उसका शास्त्राधारित होने के साथ साथ परंपरानिष्ठ तथा अपने आप में कालानुरूप परिवर्तन का समावेश होना यह उस कला को सुगठित करने के लिए भी आवश्यक हो जाता है। ऐसे सभी घटक आत्मसात करने के लिए चतुरस्त्र गले की तैयारी के साथ साथ बहुमुखी बुद्धिवैभव की आवश्यकता होती है। कभी कभी कलाकार को अपने गले की मर्यादा, अपनी क्षमता को समझते हुए तथा बुद्धि की चर्तुदिश व्याप्ति इन घटकों में से कुछ को अपनी गायकी में स्थान देना होता है। ख्याल गायकी के विस्तार क्षेत्र में जो तीन महत्पूर्ण बिंदु आते है। आरंभ बिंदु क्रमशः रंगत बढाने वाले आलाप, मध्य बिंदु लय के प्रवाह तथा बोलों की सहायता से तथा कृतियों का सृजन तथा चैतन्यपूर्ण तान अंग विविध आकर्षक पैटर्नस तथा दिशा को ध्यान में रखकर रची हुई तान, जो राग के नियमों के अनुसार ही विलंबित ख्याल के विचारों से सुत्र की तरह जुडा हो किंतु उसकी अभिव्यक्ति पूरी तरह से ऐसी हो कि वह एक स्वतंत्र विधा बन जाये।

संगीत के प्रति समर्पित अध्ययनरत कुछ कलाकारों ने संगीत की प्रवाहधारा में एक की अपेक्षा अन्य घरानों से भी शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य एवं सुअवसर प्राप्त किया तथा घरानेदार परंपरा में नवीनता लाई। घरानों में परिवर्तन लाने का योगदान आमतौर पर ग्वालीयर, आगरा, किराना, जयपुर, दिल्ली तथा पटीयाला घरानों को दिया जाता है। गायक हमेशा से ही घरानों की चौकट से आगे असीम राग विस्तार को अन्वेषण करने के लिए उत्सुक रहे है। उन्हें जिस भी घरानों के गुरू प्राप्त हुए वे सभी उदार दुष्टिकोण रखने वाले साधक थे जिनके सुसंस्कारों के कारण गायकी समृद्ध, चतुर्मुखी और समग्रता का जतन करने वाले रही।

इस प्रकार एक से अधिक घरानों से शिक्षा प्राप्त कर अथवा प्रभाव के परिणामस्वरूप शास्त्रीय संगीत जगत के अनेक प्रसिद्ध एवं प्रमुख कलाकारों ने प्रखर बुद्धिवादी, संगीत की विवेकपूर्ण दृष्टि एवं गायकी के संस्कार पर आधारित रस एवं

सौंदर्य से परिपूर्ण मिश्रित अथवा समन्वित गायकी द्वारा न केवल शास्त्रीय संगीत जगत को नवीनता प्रदान की अपितु शास्त्रीय गायकी के क्षेत्र की समृद्धता में वृद्धि भी की है।

यदि एक घराने की शुद्ध गायकी की बात की जाए तो प्राचिन समय में घराना शिक्षण प्रणाली के अंर्तगत एक परंपरा अथवा घराने की शुद्धता गायकी की विधिवत शिक्षा प्राप्त कर तैयार निपुण कलाकारों की गायकी में मूल तत्व समान होते हुए भी कुछ भिन्नता अवश्य दिखाई देती है। उसका मूल एवं स्वभाविक कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति एवं कलाकार की प्रकृति, स्वभाव, प्रवृति अथवा मिजाज अलग होता है।, अतः उसकी बौद्धीक दृष्टि, स्वभाव, संस्कार, रूची, विचार एवं भावाभीव्यक्ति में भी भिन्नता स्वाभाविक है।

प्राचीन समय की अपेक्षा आज किसी एक घराने की शुद्ध गायकी के कडे नियम नहीं रहे। आज संगीत सुनने के इतने माध्यम है कि गायक श्रोताओं पर उसका प्रभाव न पडे, यह असंभव आहे। जब कोई कलाकार एक घराने की गायकी की शिक्षा लेता है तो वह पूर्ण अभ्यास द्वारा उस गायकी को प्रस्तुत करने में निपूर्ण व सक्षम होना चाहिए। किसी भी एक या एक से अधिक घरानों से जब कोई कलाकार शिक्षा लेता है। तो प्रत्येक गायकी की विधिवत शिक्षा अर्थात व्याकरण शास्त्र मूल तत्व संस्कार इत्यादि आत्मसात कर चिंतन, पूर्ण अभ्यास व विश्लेषण पर आधारित उचित एवं स्वभावीक समन्वय के पश्चात ही वह उस नवीन एवं समन्वित गायकी को प्रस्तुत करने का अधिकारी होता है।

विभिन्न घरानों के समिकरण में ध्यान देने योग्य तथ्य

दो या दो से अधिक गुरूजनों से प्राप्त शिक्षा आशिर्वाद शिष्य के समर्पण व संगीत की कडी साधना के पश्चात शास्त्र पर आधारित सौंदर्य एवं भावपूर्ण समन्वित गायकी की संगीत के विद्वान एवं दिग्गज कलाकारों ने भी सदैव प्रशंसा व सराहना की है। एक सृजनशिल एवं बुद्धिमान कलाकारों ने भी सदैव प्रशंसा व सराहना की है। एक सृजनशिल एवं बुद्धिमान कलाकार वही है जो अन्य गायकियों को सुनकर, उनसे प्रभावित होकर अपनी गायकी में संगीत की विवेक दृष्टि का प्रयोग कर केवल उन तत्वों का समावेश करे जिनका मिश्रण स्वभाविक लगे, गायकी में सौदर्य की वृद्धि करना अथ्वा बढाना एक बुद्धिमान, प्रतिभावंत, गुणी व सच्चे कलाकार की पहचान है, अतः किसी भी घराने की गायकी की परंपरा अनुशासन मूल तत्व शास्त्र एवं मूल रूप को बनाए रखते हुए उसमें नवीनता एवं समृद्धता लाना कला व शास्त्रीय संगीत के लिए हितकर है।

घरानों की गायकियों को समाकलित करते समय भी ध्यान रखने जैसी बाते है जैसे की गायकी का उचित समन्वय होना चाहिए ना की अनुसरण या ज्यों की त्यों अनुकरण। अन्यथा हमारी खुद की पहचान वहां धुमिल हो जाएगी और वह केवल किसी विशिष्ट की नकल मात्र कहलाएगी। हमारी प्रतिकृति पर आंच आ सकती है। आवाज का गुणधर्म, विशेषता, कल्पनाशिलता आदि को हमें बरकरार रखते हुए अन्य गायकियों की खुबियों को आवाज की काबिलियत के अनुसार ढालना जरूरी है। गायकियों में मिश्रण के उपरांत चिंतन, मनन, विश्लेषण तथा स्वयं अभ्यास भी उतना ही आवश्यक होता है। वह समंश्रिण गायकी की समृद्धता में अपना योगदान दे पाना चाहिए। वह प्रभावपूर्ण तथा असरदार होना चाहिए। किसी भी गायकी का समावेश करने से पूर्व उस गायकी की विधिवत शिक्षा, व्याकरण शास्त्र व संस्कार आत्मसात करने भी अत्यावश्यक है। अन्यथा गहनता का अभाव

परिलक्षित होता नजर आयेगा। शास्त्रीय संगीत में गायकी के मूल रूप को बिना बिगाडे उसमें सौंदर्य तत्वों का समावेष कर सृजनात्मक व नवीनता लाना ही सराहनीय है।

निष्कर्ष

घरानों की गायकियों में उचित परिवर्तन जोकि अपने आप में ताजगी, विविध रंगों से परिपूर्ण तथा सुगंध अपने आप में समेटे हुए होता है ऐसी गायकी को हमेशा ही सराहा गया है। यह संगीत की संपन्नता तथा समृद्धता की परिचायक है। संगीत के क्षेत्र में घरानों का अस्तित्व अपना अद्वितीय, असामान्य, बिरला तथा अनुठा स्थान रखता है। यह संगीत को एक स्थिरता, गहराई प्रदान करता है।

संदर्भः

1. वामनराव हरी देशपांडे,घरानेदार गायकी, ३३,राजकमल प्रकाशन,१ जनवरी २०२०
2. सुशिल कुमार चौबे, घरानों की चर्चा, ८६, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनउ २०१८
3. शंभुनाथ मिश्रा, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा,२०८ पब्लिकेशन डीवीशन भारत सरकार, २०१४
4. https://hi.m.wikipedia.org
5. https://indiancart.com
6. https://bharatdiscovery.org
7. https://culturalindia.net

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com